Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

सुरेश चन्द्र[1] & प्रो॰ यश पाल सिंह[2]

[1]पी–एच. डी. शोध छात्र, बी.एड./एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

[2]आचार्य, बी.एड./एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

Paper Received On: 21 DEC 2021

Peer Reviewed On: 31 DEC 2021

Published On: 1 JAN 2022

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णात्मक सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में शोध कर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली मण्डल के चार जनपद (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर एवं पीलीभीत) में से दो जनपद बरेली व पीलीभीत के पाँच विकास खण्ड व दो नगर क्षेत्र के 200 अध्यापकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि के द्वारा किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु शोधछात्र के द्वारा डॉ. के. आर. शर्मा एवं डॉ. डी. के. शर्मा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी पाँच बिन्दु लिकर्ट मापनी (पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है। शोध छात्र द्वारा संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु बारम्बारता व प्रतिशत सांख्यिकी को उपयोग में लाया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।

मुख्य शब्दावली: *सर्व शिक्षा अभियान, प्रभावशीलता, अध्यापक व दृष्टिकोण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

शिक्षा को मानव विकास एवं सामाजिक परिवर्तन हेतु एक यंत्र के रूप में समझा जाता है। शिक्षा को किसी भी समाज के सामाजिक एवं आर्थिक विकास की कुंजी कहा जाता है। शिक्षा मानव जीवन के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रत्येक क्षेत्र को अपने आप में समाहित किये हुए है। शिक्षा व्यक्ति एवं राष्ट्र के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है(लाल, 2007)। राज्य द्वारा शिक्षा पर किये गये व्यय को निवेश कहा जाता है क्योंकि शिक्षा पर व्यय किया गया धन आगे आने वाली पीढ़ी के द्वारा व्याज समेत वापस प्राप्त होता है (गुप्ता,1998)। शिक्षा के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में यह प्रावधान किया कि राज्य प्रत्येक बालक जिसकी आयु 6–14 वर्ष के मध्य है को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करायेगा। प्राथमिक स्तर की शिक्षा को सर्व–सुलभ बनाने हेतु नई शिक्षा नीति(1986) एवं संशोधित कार्य योजना(1992), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम(1994), मध्याह्न भोजन योजना(1995) आदि को लागू किया गया। वर्ष 2002 में भारतीय संविधान में 86वां संशोधन कर अनुच्छेद–21(ए) जोड़कर शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया साथ ही देश के प्रत्येक बालक को गुणवत्तापरक, संस्यायुक्त जीवन से सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा वर्ष 2001 में सर्व शिक्षा अभियान नामक एक अत्यन्त महत्वाकांक्षी योजना शुरू की गयी। सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य वर्ष 2007 तक कक्षा 1–5 तक की तथा वर्ष 2010 तक कक्षा 1–8 तक की शिक्षा की समुचित व्यवस्था करना था।

पृष्ठभूमि

प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता के अतिरिक्त मनुष्य के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए, रोज़गार उपलब्ध कराने एवं क्षेत्रीय पिछड़ेपन को दूर करने में अपना अमूल्य योगदान देती है जो किसी राष्ट्र के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है (गुप्ता,1998)। शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व को देखते हुए शोध छात्र द्वारा पूर्व किये गये शोध कार्यों का अध्ययन अग्र प्रकार किया। रामचन्द्रन (2003) ने शोध के निष्कर्ष में पाया कि गाँव में उच्च–प्राथमिक विद्यालय न हाने के कारण बहुत से अभिभावक अपनी लड़कियों को गाँव के बाहर पढ़ने नहीं भेजते हैं जिससे उनकी शिक्षा बीच में ही छूट जाती है। शर्मा (2004) ने हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जनपद में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता का अध्ययन किया और यह स्वीकार किया कि जनपद स्तर पर शैक्षिक प्रशासन की मुख्य धारा में संस्थागत विकास, समुदाय आधारित निगरानी प्रणाली व प्रभावी लागत एवं सक्षम प्रणाली के द्वारा और सुधार करके सर्व शिक्षा अभियान को और अधिक सफल बनाया जा सकता है। कुमार (2008) ने रोहतक मण्डल में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता का उसकी लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि सर्व शिक्षा अभियान की लक्ष्य–प्राप्ति के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्क है। रेड्डी एवं देवी (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि 44.44 प्रतिशत अध्यापकों ने यह अवलोकन किया कि अनुसूचित जाति के बच्चे बीच में ही अपनी शिक्षा को छोड़ देते है इसका का मुख्य कारण अभिभावकों की अशिक्षा, गरीबी, लडकियों का अल्प आयु में विवाह आदि अनेक

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्याएं हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को जानने हेतु अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया।

समस्या कथन

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

संक्रियात्मक परिभाषाएं

सर्व शिक्षा अभियान

सर्व शिक्षा अभियान से आशय 6–14 वर्ष आयु वर्ग के उन सभी बालकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा हेतु नामांकित कर उन्हें सन् 2010 तक कक्षा 8 तक की प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने से है।

प्रभावशीलता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रभावशीलता का तात्पर्य सर्व शिक्षा अभियान का उस की लक्ष्य–प्राप्ति से लिया गया है।

लक्ष्य–प्राप्ति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में लक्ष्य–प्राप्ति से आशय लक्ष्य–प्राप्ति मापनी के पाँचो आयामों से है जो क्रमशः अधिगम, सहगामी क्रियाएं, संस्थागत परिवेश, छात्र नियमितता व सेवाएं, एवं जागरूकता के सन्दर्भ में प्रभावशीलता का मापन करना है।

अध्यापक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बरेली मण्डल में संचालित कक्षा 1–8 तक के सरकारी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है।

दृष्टिकोण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति ग्रामीण पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति कुल पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति ग्रामीण महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
6. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति कुल महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध की मान्यताएं

1. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को शहरी पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
2. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को ग्रामीण पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
3. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को कुल पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
4. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को शहरी महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
5. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को ग्रामीण महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
6. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को कुल महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण माना जा सकता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक प्रृकित का है जिसके अन्तर्गत वर्णित सर्वेक्षण विधि को शोध हेतु प्रयोग में लाया गया है। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों, प्रचलित विश्वासों, दृष्टिकोणों या स्थापित अभिवृतियों एवं अभिमतों से लिया जाता है, जिसमें किसी क्षेत्र, समुह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने का प्रयास किया जाता है (गुप्ता, 2017)।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्याा के रूप में बरेली मण्डल (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर व पीलीभीत जनपद) में संचालित सरकारी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययापनरत् अध्यापकों को सम्मिलित किया गया ।

न्यादर्शन व न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के चयन हेतु बरेली मण्डल (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर व पीलीभीत जनपद) में से 2 जनपद बरेली व पीलीभीत के 5 विकास खण्ड व 2 नगर क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय व

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययापनरत् 200 अध्यापकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी प्रविधि के द्वारा किया गया।

सारणी–1

न्यादर्श का विवरण

क्र. सं.	चर	चर का स्तर	संख्या	योग
1	लिंग	पुरूष	109	200
		महिला	91	
2	आवासीय स्थिति	शहरी	75	200
		ग्रामीण	125	

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध कर्ता ने सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण के मापन हेतु डॉ. के. आर. शर्मा एवं डॉ. डी. के. शर्मा के द्वारा निर्मित प्रमापीकृत लक्ष्य–प्राप्ति मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत मापनी लिर्कट के पाँच बिन्दु (पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है।

सारणी–2

दृष्टिकोण मापनी का विवरण

मपनी	कथनों की संख्या	कथनों की प्रकृति	विश्वसनीयता गुणांक	वैधता गुणांक
लक्ष्य–प्राप्ति मापनी	25	धनात्मक	0.83	0.79

उपकरण का प्रशासन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध छात्र ने आंकडों के संग्रहण हेतु स्वयं प्राथमिक व उच्च–प्राथमिक विद्यालयों में जाकर विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को अपना परिचय देते हुए अपने शोध के उद्देश्यों से अवगत कराया। शोध छात्र द्वारा प्रधानाध्यापकों से यह आग्रह किया गया कि वे अपने सहायक अध्यापकों व स्वयं के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति दृष्टिकोण मापनी पर विचार

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

देने का कष्ट करें। सभी प्रधानाध्यापकों एवं सहायक अध्यापकों के द्वारा दृष्टिकोण मापनी पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की गयी।

फलांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध छात्र द्वारा दृष्टिकोण मापनी पर अध्यापकों के प्राप्तांकों का फलांकन करने के हेतु फलांकन कुंजी का प्रयोग किया गया। अध्यापकों को मापनी के कथन पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत पर क्रमशः 5, 4, 3, 2 व 1 अंक प्रदान किया गया। इस प्रकार दृष्टिकोण मापनी पर अध्यापकों के प्राप्तांकों का न्यूनतम व अधिकतम प्रसार 25 से 125 तक है।

सारणी–3

ग्रेड प्रणाली

वर्ग	25–35	35–45	45–55	55–65	65–75	75–85	85–95	95–105	105–115	115–125
ग्रेड	निकृष्ट	अति सूक्ष्म	सूक्ष्म	निम्न	अति निम्न	औसत	उच्च	अति उच्च	अत्यधिक उच्च	उत्कृष्ट

आकंड़ो का विश्लेषण

सारणी–4

लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

वर्ग	पुरूष						महिला					
	शहरी		ग्रामीण		कुल पुरूष		शहरी		ग्रामीण		कुल महिला	
	F	٪	f	٪	f	٪	f	٪	f	٪	F	٪
25–35	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
35–45	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
45–55	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
55–65	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
65–75	0	0	0	0	0	0	0	0	2	3.08	2	2.20
75–85	2	4.08	8	13.33	10	9.17	0	0	6	9.23	6	6.59
85–95	23	46.94	26	43.33	49	44.95	6	23.08	19	29.23	25	27.47
95–105	22	44.90	22	36.67	44	40.37	17	65.38	31	47.69	48	52.75
105–115	2	4.08	3	5.00	5	4.59	3	11.54	6	9.23	9	9.89

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

115–125	0	0	1	1.67	1	0.92	0	0	1	1.54	1	1.10
i=10	**N= 49**	**100 ⁄**	**N= 60**	**100 ⁄**	**N= 109**	**100 ⁄**	**N= 26**	**100 ⁄**	**N= 65**	**100 ⁄**	**N= 91**	**100⁄**

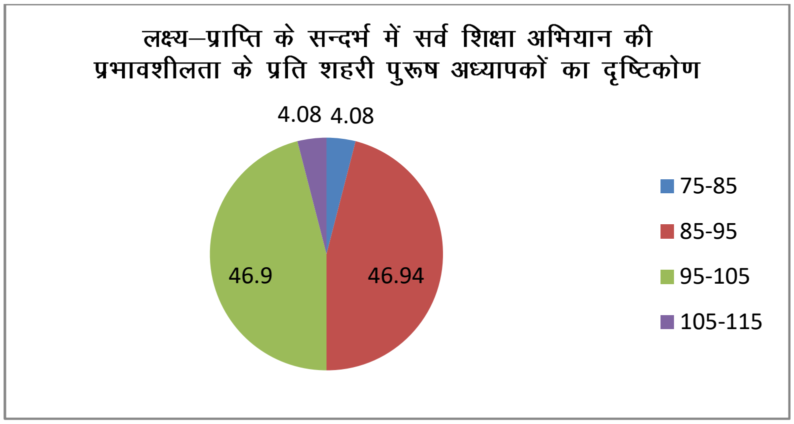

रेखाचित्र–1

सारणी 4 से स्पष्ट होता है कि वर्ग 25–75 के मध्य शहरी पुरूष अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। 75–85 वर्ग के अन्तर्गत आने वाले शहरी पुरूष अध्यापकों की संख्या व उनके द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत 2 व 4.08 रहा। वर्ग 85–95 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले शहरी पुरूष अध्यापकों की संख्या 23 एवं उनका प्रतिशत 46.94 है। वर्ग समूह 95–105 में आने वाले शहरी अध्यापक 22 जबकि उनके द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत 46.90 पाया गया। वर्ग अन्तराल 105 से 115 के मध्य शहरी पुरूष अध्यापकों की संख्या मात्र 2 रही लेकिन उनका प्रतिशत 4.08 रहा। वर्ग 115–125 के अन्तर्गत शहरी पुरूष अध्यापकों की व उनका प्रतिशत शून्य पाया गया। उपरोक्त रेखाचित्र 1 के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दृष्टिकोण मापनी पर शहरी पुरूष अध्यापकों का दृष्टिकोण औसत से अधिक लेकिन उत्कृष्ट से कम पाया गया जिससे यह स्पष्ट होता है कि लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को शहरी पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

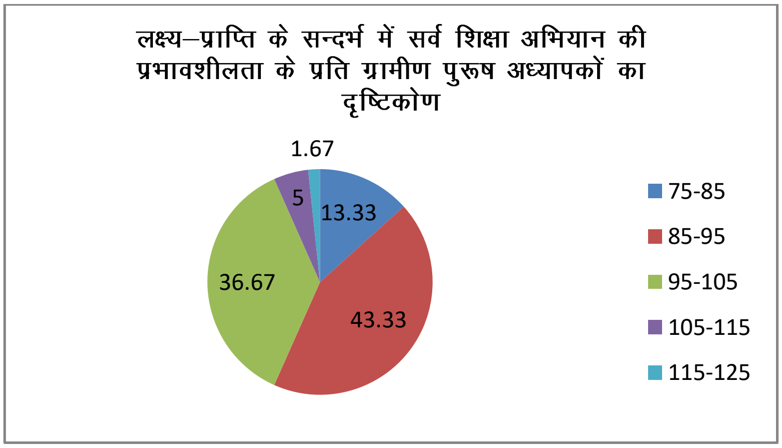

रेखाचित्र–2

सारणी 4 से स्पष्ट होता है कि वर्ग 25–75 के अन्तर्गत ग्रामीण पुरूष अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। 75–85 वर्ग के मध्य आने वाले ग्रामीण पुरूष अध्यापकों की संख्या व उनके द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत 8 व 13.33 रहा। वर्ग 85–95 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले ग्रामीण पुरूष अध्यापकों की संख्या 26 एवं उनका प्रतिशत 43.33 है। वर्ग समूह 95–105 में आने वाले ग्रामीण अध्यापक 22 जबकि उनके द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत 36.67 पाया गया। वर्ग अन्तराल 105 से 115 के मध्य ग्रामीण पुरूष अध्यापकों की संख्या मात्र 3 रही लेकिन उनका प्रतिशत 5 रहा। वर्ग 115–125 के अन्तर्गत ग्रामीण पुरूष अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत 1 व 1.67 पाया गया। रेखाचित्र 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि दृष्टिकोण मापनी पर ग्रामीण पुरूष अध्यापकों का दृष्टिकोण औसत ग्रेड से अधिक पाया गया जिसके आधार पर लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल माना जा सकता है।

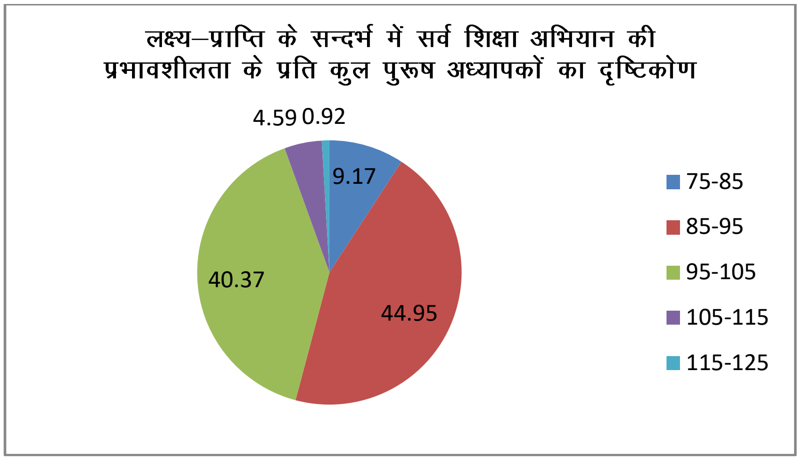

रेखाचित्र–3

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारणी 4 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ग वर्ग 25–75 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले कुल पुरूष अध्यापकों की संख्या एवं उनका प्रतिशत शून्य है। 75–85 वर्ग के अन्तर्गत आने वाले कुल पुरूष अध्यापक 10 है जबकि उनका प्रतिशत 9.17 है। 85 से 95 के मध्य कुल पुरूष अध्यापकों की संख्या 49 है वहीं उनका प्रतिशत 44.95 रही। वर्ग समूह 95–105 के मध्य कुल पुरूष अध्यापक 44 रहे वहीं उनका प्रतिशत 40.37 रहा। वर्ग अन्तराल 105 से 115 के अन्तर्गत कुल पुरूष अध्यापकों की संख्या 5 तथा उनका प्रतिशत 4.59 है। वर्ग 115–125 के मध्य कुल पुरूष अध्यापकों की संख्या मात्र 1 है जबकि उनका प्रतिशत 0.92 रहा। रेखाचित्र 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दृष्टिकोण मापनी पर कुल पुरूष अभिभावकों के द्वारा औसत तथा औसत से अधिक अंक प्राप्त किये है जिसके आधार पर लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल माना जा सकता है। पूर्व में किये गये शोध अध्ययनों में कुमार (2008) ने भी स्वीकार किया कि कुल पुरूष अध्यापक लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

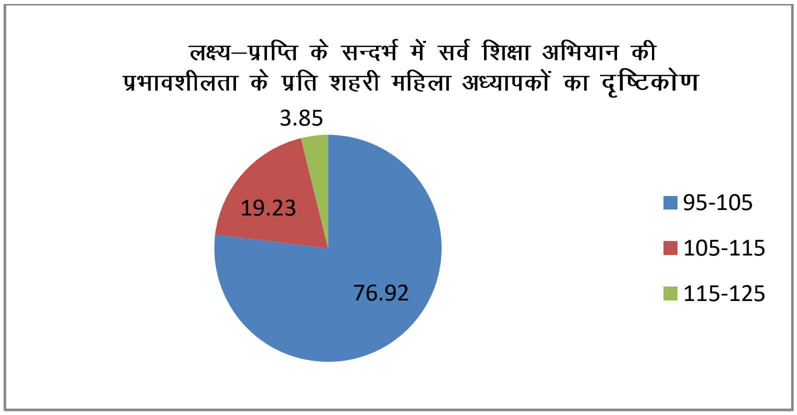

रेखाचित्र–4

सारणी 4 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वर्ग 25–95 के मध्य अंक प्राप्त करने वाली शहरी महिला अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। वर्ग समूह 95 से 105 के अन्तर्गत आने वाली शहरी महिला अध्यापकों की संख्या व उनका 6 व 3.85 प्रतिशत रहा। वर्ग अन्तराल 105–115 के मध्य आने वाली शहरी महिला अध्यापक 17 है जबकि उनका प्रतिशत 19.23 है। 115–125 वर्ग के मध्य मात्र 3 शहरी महिला अध्यापक आती है परन्तु उनका प्रतिशत 3.85 है। रेखाचित्र 4 से स्पष्ट होता है कि दृष्टिकोण मापनी पर शहरी महिला अध्यापकों ने जो अंक प्राप्त किये गये वे सभी औसत तथा औसत से अधिक ग्रेड पर स्थित है जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी महिला अध्यापक लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल मानती हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

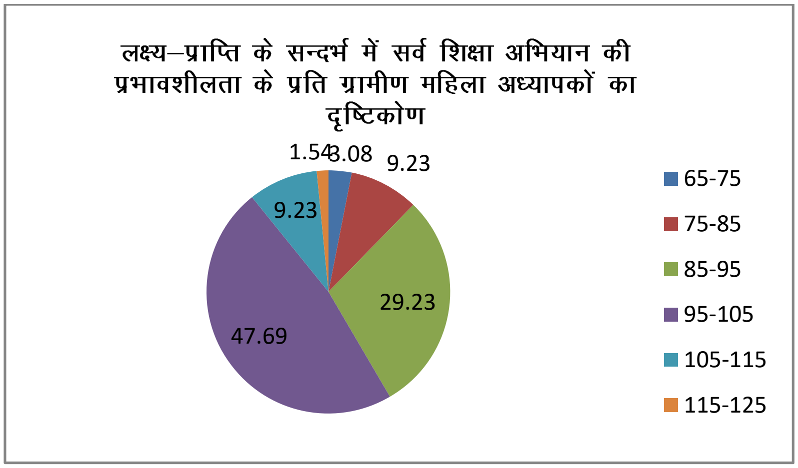

रेखाचित्र–5

सारणी 4 पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि वर्ग 25–65 के मध्य ग्रामीण महिला अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। वर्ग समूह 65–75 के अन्तर्गत आने वाली ग्रामीण महिला अध्यापकों की संख्या 2 है जबकि उनका प्रतिशत 3.08 है। वर्ग अन्तराल 75 से 85 के मध्य ग्रामीण महिला अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत 6 व 9.23 रहा। वर्ग 95 से 105 तक ग्रामीण महिला अध्यापकों की संख्या 19 रही वहीं उनका प्रतिशत 29.23 रहा। 95 से 105 के मध्य आने वाली ग्रामीण महिला अध्यापकों की संख्या 31 रही जबकि प्रतिशत 47.69 है। वर्ग अन्तराल 105 से 115 तक 6 ग्रामीण महिला अध्यापक अंक प्राप्त करती है जबकि उनका प्रतिशत 9.23 पाया गया। वर्ग 115–125 के मध्य मात्र 1 ग्रामीण महिला अध्यापक आती है परन्तु उनका प्रतिशत 1.54 रहता है। रेखाचित्र 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दृष्टिकोण मापनी पर 3.08% ग्रामीण महिला अध्यापकों ने औसत ग्रेड से कम अंक प्राप्त किये है जबकि 96.92% ग्रामीण महिला अध्यापक औसत व औसत से अधिक अंक प्राप्त किये है जिसके आधार पर ग्रामीण महिला अध्यापकों की दृष्टि में लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल माना जा सकता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

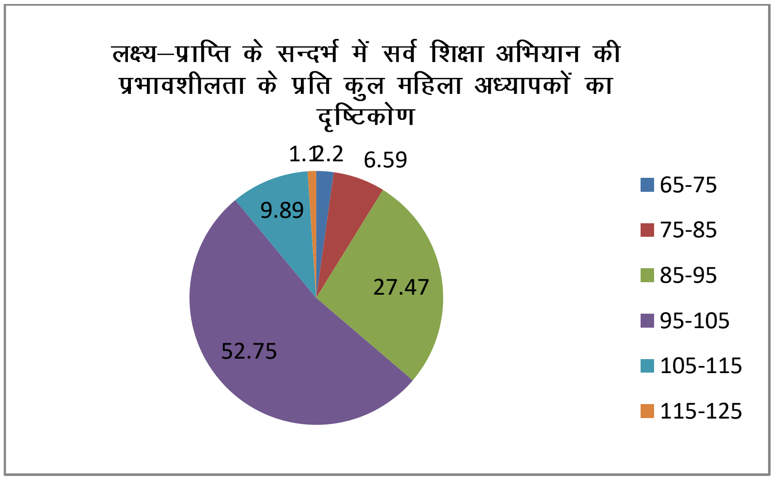

रेखाचित्र–6

सारणी 4 अवलोकन से ज्ञात होता है कि वर्ग 25–65 तक अंक प्राप्त करने वाली कुल महिला अध्यापकों की व उनका प्रतिषत शून्य रहा। समूह 65–75 के मध्य कुल महिला अध्यापकों की संख्या व उनका प्रतिशत क्रमशः 2 व 2.2 है। वर्ग अन्तराल 85 से 95 तक आने कुल महिला अध्यापकों की संख्या 6 है जबकि उनका प्रतिशत 6.59 रहा। 95–105 तक कुल 25 महिला अध्यापक अंक प्राप्त करती है लेकिन उनका अंक प्राप्ति का प्रतिशत 27.47 है। वर्ग 105–115 के मध्य कुल महिला अध्यापकों की संख्या 48 रहीं वहीं उनका प्रतिशत 52.75 रहा। 115 से 125 मध्य मात्र कुल महिला अध्यापकों की संख्या 1 है जबकि उसका प्रतिशत 1.1 है। रेखाचित्र 6 से स्पष्ट होता है कि दृष्टिकोण मापनी पर औसत से कम अंक प्राप्त करने वाली कुल महिला अध्यापक मात्र 2.2% है जबकि औसत व औसत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली कुल महिला अध्यापकों का प्रतिशत 97.8 है जिसके आधार पर लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल माना जा सकता है। पूर्व में किये गये शोध अध्ययनों में कुमार(2008) ने भी स्वीकार किया कि कुल महिला अध्यापक भी लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष अग्र प्रकार है–

1. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को शहरी पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
2. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को ग्रामीण पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
3. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को कुल पुरूष अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।

4. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को शहरी महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
5. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को ग्रामीण महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।
6. लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को कुल महिला अध्यापकों के दृष्टिकोण में सफल माना जा सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. सर्व शिक्षा अभियान प्राथमिक स्तर की एक व्यापक योजना है जिसका सफलतापूर्वक संचालन होना बहुत ही आवश्यक है क्योंकि इसके सफल संचालन पर ही इसकी सफलता और असफलता निर्भर है करती है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष पुरूष/महिला व शहरी/ग्रामीण अध्यापकों को लक्ष्य–प्राप्ति सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को समझने में सहायता प्रदान करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप अध्यापक ऐसे कार्य करेंगे जिससे सर्व शिक्षा अभियान के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अध्यापकों के अतिरिक्त प्राथमिक शिक्षा से जुड़े अन्य व्यक्यिों में जैसे–छात्र व अभिभावक आदिको लक्ष्य–प्राप्ति के सन्दर्भ में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण को समझने सहायता प्रदान करेंगे।

सन्दर्भ सूची

सर्व शिक्षा अभियान प्रोगरैमः फॉर यूनीवर्सल एजूकेशन इन इण्डिया. (2000). *डिपार्टमेन्ट ऑफ इलेमेन्टरी एजूकेशन एण्ड लिट्रेसी. एमएचआरडी.* गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया. न्यू देहली.

गुप्ता, एस. पी. (2017) *अनुसंधान संदर्शिकाः सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि*. इलाहबाद, शारदा पुस्तक भवन.

गुप्ता, एस. पी एण्ड गुप्ता, ए. (2019). *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें.* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

कुमार. एस. (2008). *हरियाणा के रोहतक मण्डल में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक.* पी–एच. डी. थीसिस. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी.

लाल, आर. बी. (2007). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त.* मरेठ, आर. लाल बुक डिपो.

रेड्डी, पी. ए., देवी, यू. एण्ड रेड्डी, इ. ए. (2009). *इनक्लुजिव ऑफ द ऐक्सक्लूड्स इन एजूकेशन : स्टेटस एण्ड ए परसेप्शन ऑफ शेड्यूल्ड कास्ट्स टूवार्ड्स एजूकेशन.* न्यू देहली, स्वरूप बुक पब्लीशर्स. 169.172.

रामचन्द्रन, वी. (2003). बैकवर्ड एण्ड फॉर्वड लिन्केज दैट स्ट्रैन्थ प्राईमरी ऐजूकेशन. *इकोनोमिक एण्ड पॉलिटीकल वीकिली.* 38(1).5.

शर्मा, एस. (2004). *ए स्ट्डी ऑफ इफेक्टिवनेश ऑफ एसएसए इन डिस्ट्रिक्ट हमीरपुर इन टर्म ऑफ एकैडमिक अचीवमेन्ट्स ऑफ स्टूडेन्ट्स.* एम. एड. डिजर्टेशन. हिमाचल प्रदेश

.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies